मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 86, जून(प्रथम), 2020

घर में ही रहें

रवि रंजन गोस्वामी

सपना, सरोज, अशोक और अनिल 11 वीं कक्षा में पढ़ते थे और क्लास फेलो और दोस्त थे। अनिल और सरोज सिर्फ दोस्त थे। अशोक और सपना भी कहते थे कि वे सिर्फ अच्छे दोस्त थे। हालाँकि, सरोज को पता था कि वे एक-दूसरे के प्रति कुछ अधिक महसूस करते थे । सपना ने सरोज से अशोक के लिए अपनी भावनाओं को कबूल किया था।

कोरोना के प्रकोप के कारण यह लॉकडाउन अवधि थी। वे ज्यादातर समय घर पर ही रहते थे। सपना और सरोज अगल-बगल के घरों में रहतीं थीं। वे अपने मकानों के बीच खड़ी चार फुट ऊंची सीमा की दीवार के पास खड़े होकर बात कर सकतीं थीं।

हर दिन वे बात करतीं थीं अन्यथा वे व्हाट्सएप पर चैट करतीं थीं।

एक दिन सरोज ने सपना से पूछा, "तुम्हारा बॉयफ्रेंड कैसा है?"

सपना ने उसे चुप कराया, "शी शी ..."

सरोज ने पूछा, "क्या हुआ?"

सपना, “कृपया बॉयफ्रेंड न कहो । बेहतर है अशोक बोलो। यदि कोई सुनता है तो मुझे कई सवालों के जवाब देने होंगे। ”

सरोज, “ओके। अशोक। "

सपना, "वह ठीक होना चाहिए।"

सरोज, "क्या तुम उसके साथ चैट नहीं करती हो?"

सपना, "हम कभी-कभी चैट करते हैं।"

सरोज, “क्या तुमने उसकी ईमानदारी का परीक्षण किया है? क्या वह वास्तव में तुम्हारी परवाह करता है? ”

सपना, "नहीं।"

सरोज को एक तरकीब सूझी।

उसने सपना से कहा, "तुम उसे अभी परख सकती हो।"

सपना ने उससे पूछा, "कैसे?"

सरोज, "अभी उसे मिलने के लिए बुलाओ।"

सपना, “सरोज क्या तुम पागल हो? अगर मैं चाहती हूं कि वह मेरी परवाह करे तो मुझे भी उसकी परवाह करनी होगी। मैं उसे लॉकडाउन को तोड़ने और खुद को और दूसरों को कोरोना संक्रमण के खतरे में डालने को नहीं कह सकती। "

सरोज को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने कहा, “आई एम सॉरी । तुम सही हो। हमें किसी को भी लॉकडाउन का उल्लंघन करने के लिए उकसाना या भड़काना नहीं चाहिए। बेहतर है लोग घरों में ही रहें । ”

घरों के अंदर जाने का समय हो गया था।

उन्होंने नमस्ते किया और अपने घरों के अंदर चलीं गयीं।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें